ISSN-2230-7540

भारत में जैव विविधता संकट एवं संरक्षण

Anita Mathur*

Lecturer, Department of Geography,
Babu Shobha Ram Government Arts College,
Alwar, Rajasthan

शोध पत्र सारांश

इस शोध लेख में भारत में जैव विविधता संकट और संरक्षण का भौगोलिक अध्ययन किया गया है। इस धरती पर अरबों साल पहले, जीवों का जन्म हुआ था। वह वातावरण पृथ्वी पर मौजूद है जिसके कारण जीवों का अस्तित्व संभव है। ऑक्सीजन, पानी, तापमान, आर्द्रता, मिट्टी, प्रकाश सभी संतुलित मात्रा में पृथ्वी पर उपलब्ध हैं। जिसके कारण जीवन संभव था, विभिन्न जीवों का, चाहे वह पौधे हों या पेड़-पौधे हों, पशु हों या पक्षी, बैक्टीरिया हों, वायरस हों या मनुष्य हों, सभी एक-दूसरे के साथ मिलकर विकसित हुए हैं और पारिस्थितिक चक्र से एक-दूसरे के साथ विद्यमान हैं, सभी के लिए ऊर्जा का प्रवाह वर्षों से है। पृथ्वी पर पाए जाने वाले सभी जीवों (पेड़, पौधे, पशु, पक्षी और मनुष्य) में परस्पर भिन्नता पाई जाती है। यह जैव विविधता स्थानीय से राष्ट्रीय और वैश्विक रूप से भिन्न होती है, जो उस स्थान की जलवायु, तापमान, आर्द्रता, मिट्टी और प्रकाश की उपलब्धता आदि से निर्धारित होती है। जैव विविधता के विलुप्त होने का सबसे बड़ा कारण इन जीवों के आवासों का समाप्त होना है। मनुष्यों ने अपने हितों के लिए जंगलों को खत्म कर दिया है, जिससे कई प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर हैं। इसी तरह, खेती में क्षमता से अधिक उत्पादन के लिए भूमि का दोहन किया जा रहा है, जो भूमि में फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले कारकों को नुकसान पहुंचाता है और इसकी उर्वरता खो देता है। प्रकृति की रचना और अस्तित्व में जैव विविधता प्रमुख भूमिका निभाती है। इसलिए, अगर यह कम हो जाता है, तो पर्यावरण चक्र में एक गति से आता है और यह जीवों पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालना शुरू कर देता है। वर्तमान में जैव विविधता के प्रति सचेत होने का कारण जैव विविधता का तेजी से नुकसान है।

मुख्य शब्द कुंजी – *भारत में जैव विविधता, जैव विविधता संकट, जैव विविधता संकट, जैव विविधता का महत्व, जैव विविधता संरक्षण के लिए सुझाव, जैव विविधता संरक्षण प्रयास।*

परिचय

इस धरती पर अरबों साल पहले, जीवों का जन्म हुआ था। वह वातावरण पृथ्वी पर मौजूद है जिसके कारण जीवों का अस्तित्व संभव है। ऑक्सीजन, पानी, तापमान, आर्द्रता, मिट्टी, प्रकाश सभी संतुलित मात्रा में पृथ्वी पर उपलब्ध हैं। जिसके कारण जीवन संभव था, विभिन्न जीवों का, चाहे वह पौधे हों या पेड़-पौधे हों, पशु हों या पक्षी, बैक्टीरिया हों, वायरस हों या मनुष्य हों, सभी एक-दूसरे के साथ मिलकर विकसित हु, हैं

ISSN-2230-7540

और पारिस्थितिक चक्र से एक-दूसरे के साथ विद्यमान हैं, सभी के लिए ऊर्जा का प्रवाह वर्षों से है। पृथ्वी पर पाए जाने वाले सभी जीवों (पेड़, पौधे, पशु, पक्षी और मनुष्य) में परस्पर भिन्नता पाई जाती है। यह जैव विविधता स्थानीय से राष्ट्रीय और वैश्विक रूप से भिन्न होती है, जो उस स्थान की जलवायु, तापमान, आर्द्रता, मिट्टी और प्रकाश की उपलब्धता आदि से निर्धारित होती है।

भौतिक और रासायनिक परिवर्तनों के कारण, पृथ्वी पर विभिन्न खगोलीय घटनाएं और उत्परिवर्तन आदि जीवों का विकास और विकास हुआ। जो जीव पहले उभरे थे वे एक कोशिका थे जिनकी बहुस्तरीय और बहुत ही जटिल संरचना विकास के विभिन्न चरणों को पार करने के बाद विकसित हुई। विकास की शुरुआत हरे पौधों के जन्म से हुई थी और आज भी उसी सौर ऊर्जा को परिवर्तित करके और हम सभी के लिए भोजन का निर्माण करके, हम इस पारिस्थितिकी तंत्र के स्तंभ हैं। उनके बिना, हम सभी का जीवन एक पल के लिए भी संभव नहीं है, क्योंकि वे केवल हमारे लिए भोजन, पानी और जीवन प्रदान करते हैं। इन पौधों और जानवरों की विभिन्न प्रजातियां मानव जीवन के लिए अधिक उपयोगी होंगी। क्योंकि ये सभी न केवल भोजन, बल्कि फल, फूल, दवाइयां, लकड़ी, मसाले, जन्म से लेकर मृत्यु तक और उपयोगी चीजें प्रदान करते हैं।

प्रौद्योगिकी और मशीनों के विकास के साथ, मनुष्यों को अपनी विविधता में इन जीवित प्राणियों के मूल्य को समझना होगा और उनकी रक्षा करने के तरीके खोजने होंगे। प्रकृति को जैव विविधता के रूप में दी गई अपार प्राकृतिक संपदा के संरक्षण के लिए प्रयास करने होंगे, बस पौधों और हर जीवित चीज में विभिन्न प्रजातियों और विविधता का निर्माण किया गया है। तभी गेहूं-चावल से लेकर आम, अनार और गुलाब, गेंदा से गुलमोहर, अमलतास और चींटी से लेकर हाथी और सांप से लेकर शेर तक की विभिन्न प्रजातियां सुरक्षित रहेंगी। वे हमारे विकास के निर्दोष और निर्दोष मूल्य ले रहे हैं।

हमने उनके विकास के लिए उनके घरों को छीनने, प्रकृति को बाधित करने, बनाई गई भजन श्रृंखला, उनसे भोजन छीनने और उनके रहने का आधार छीनने का पाप लिया है, जो हमारे जीवन को भी नुकसान पहुंचा रहा है।

अध्ययन क्षेत्र

भारत की भौगोलिक प्रकृति भारत में भौगोलिक तत्वों के वितरण और इसके पैटर्न को संदर्भित करती है जो लगभग हर पहलू में काफी विविध है। भारत का अक्षांशीय विस्तार *08°04* मिनट से *37* डिग्री *06* मिनट उत्तर और *68* डिग्री *07* मिनट से *97* डिग्री *25* मिनट पूर्व में है। दक्षिण एशिया के तीन प्रायद्वीपों के मध्यवर्ती प्रायद्वीप पर स्थित, यह देश अपने *32,87,263* वर्ग किमी क्षेत्र के साथ दुनिया का सातवां सबसे बड़ा देश है। यह लगभग *1.3* बिलियन की आबादी के साथ चीन के बाद दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश भी है। भारत की भौगोलिक संरचना में लगभग सभी प्रकार की स्थलाकृति पाई जाती है। एक तरफ उत्तर में विशाल हिमालय पर्वतमाला है, और दूसरी तरफ और विस्तृत हिंद महासागर है, एक तरफ ऊंचे और नीचे और टूटे हुए डेक्कन का पठार है, जबकि दूसरी तरफ एक भी है विशाल और सपाट सिंधु.गंगा.ब्रह्मपुत्र का मैदान, चौड़ा थार दूसरी ओर समुद्र के किनारे के हिस्से हैं जहाँ रेगिस्तान में विभिन्न रेगिस्तानी स्थलीय रूप पाए जाते हैं। कर्क रेखा *(Tropic of Cancer)* लगभग इसी से गुजरती है और लगभग हर प्रकार की जलवायु भी यहाँ पाई जाती है। भारत में पौधों, जीवों, मिट्टी, वनस्पति और प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से भौगोलिक विविधता भी है।

ISSN-2230-7540

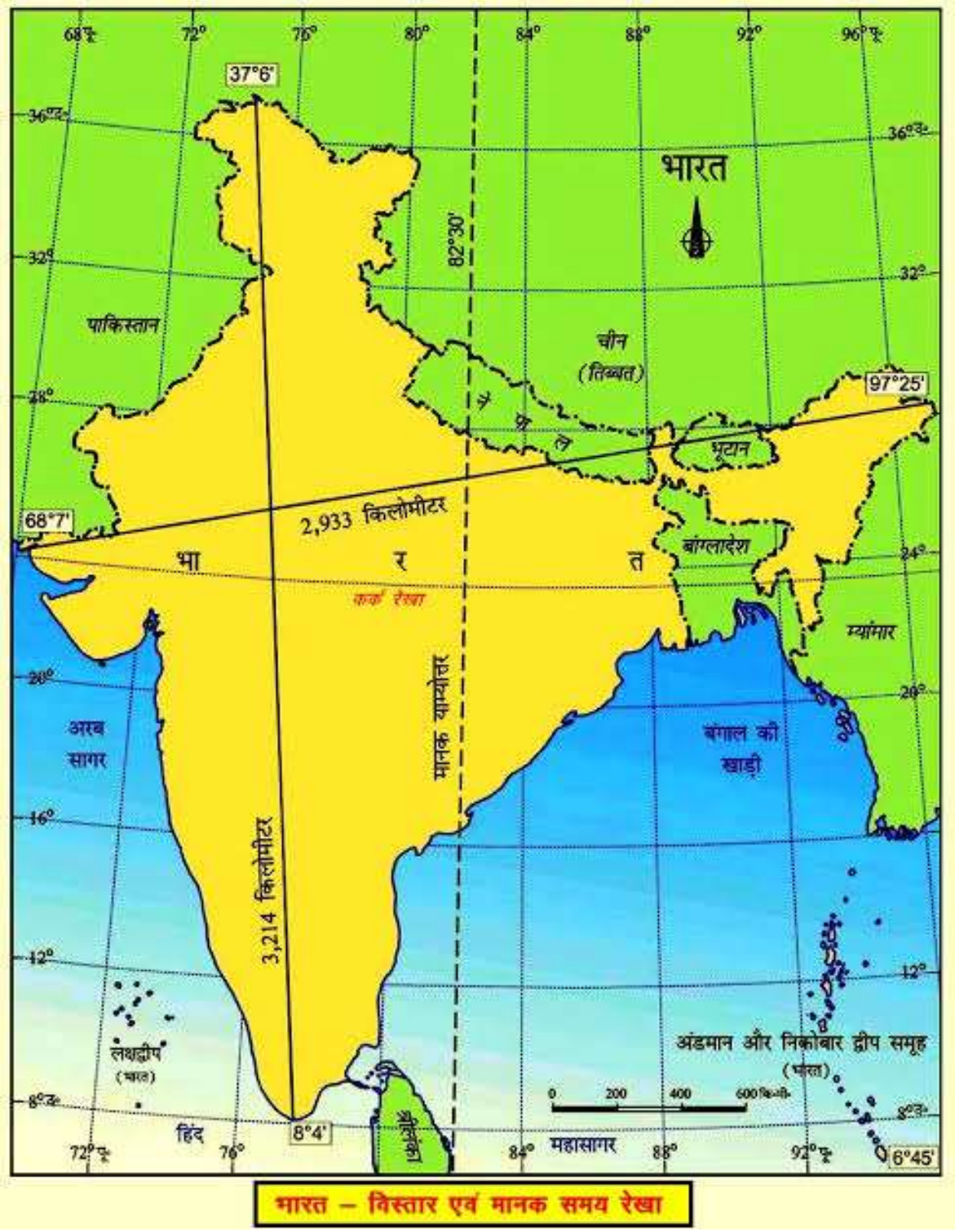

भारत – विस्तार एवं मानक समय रेखा

उद्देश्य

शोध पत्र के उद्देश्य इस प्रकार हैं।

1. भारत में जैव विविधता का भौगोलिक अध्ययन किया गया है।

ISSN-2230-7540

2. जैव विविधता के महत्व का अध्ययन किया गया है।

3. भारत में जैव विविधता संरक्षण के उपाय सुझाए गए हैं।

परिकल्पना

1. भारत के व्यापक भौगोलिक प्रसार के कारण जैव विविधता अधिक हो जाती है।

2. भारत की जातीय जैव विविधता संकट लगातार बढ़ रहा है।

3. जैव विविधता संरक्षण के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

अध्ययन विधितन्त्र

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक और द्वितीयक डेटा का उपयोग किया गया है। प्राथमिक डेटा का संकलन प्रश्नावली, अनुसूची, साक्षात्कार, व्यक्तिगत संपर्क के माध्यम से किया गया है। विभिन्न पत्रिकाओंए समाचार पत्रों और विभिन्न वेबसाइटों और पुस्तकों के माध्यम से माध्यमिक डेटा प्राप्त किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति वैज्ञानिक अध्ययन की पद्धति पर आधारित है।

जैव विविधता

जैव विविधता शब्द का उपयोग पहली बार *1986* में अमेरिकन एन्टोमोलॉजिस्ट ईओ विल्सन द्वारा अमेरिकन फोरम ऑन बायोलॉजिकल डायवर्सिटी में प्रस्तुत की गई रिपोर्ट में किया गया था। यह शब्द दो शब्दों का एक समूह है अर्थात् *"और"* जिसे श्जिवश् और श्विविधताश् द्वारा हिंदी में भी व्यक्त किया गया है, जिसका अर्थ है कि जैव दुनिया में विविधता। जैव विविधता से तात्पर्य प्रत्येक क्षेत्र, देश, महाद्वीप या विश्व स्तर पर होने वाले जीवों *(*पौधों और जीवों*)* की विविधता से है। इसमें सूक्ष्म जीवों से लेकर संपूर्ण जीव जगत तक सब कुछ शामिल है।

जैव विविधता का मुख्य कारण भौगोलिक वातावरण में विविधता है और यह लाखों वर्षों से चली आ रही एक सतत प्रक्रिया का प्रतिफल है। इस पृथ्वी पर लगभग *2* मिलियन जैविक प्रजातियां हैं और प्रत्येक जीव का पारिस्थितिक तंत्र में महत्व है।

प्रकृति की रचना और अस्तित्व में जैव विविधता प्रमुख भूमिका निभाती है। इसलिए, अगर यह कम हो जाता है, तो पर्यावरण चक्र में एक गति से आता है और यह जीवों पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालना शुरू कर देता है। वर्तमान में जैव विविधता के प्रति सचेत होने का कारण जैव विविधता का तेजी से नुकसान है।

अनुमान है कि दुनिया में हर साल लगभग *10,000* से *20,000* प्रजातियां विलुप्त हो रही हैं। इस प्रकार का नुकसान पूरी दुनिया के लिए हानिकारक है। इसलिए, इसका उचित रूप जानकर इसकी रक्षा करना बहुत महत्वपूर्ण है। आनुवंशिक, कार्यात्मकरू आनुवंशिक विविधता, प्रजातियों की विविधता और पारिस्थितिक विविधता के आधार पर जैव विविधता को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

(I) आनुवंशिक विविधता

जीवों और पौधों के बीच हर अंतर आनुवंशिक आधार पर आधारित होता है जो श्जीनश् के कई समन्वय पर आधारित होता है और उनकी पहचान होती है क्योंकि प्रत्येक मानव एक दूसरे से अलग होता है। यह आनुवंशिक विविधता प्रजातियों के स्वस्थ विकास के लिए आवश्यक है। यदि आनुवंशिकता की प्रकृति बदलती है या *"*जीन*"* रूप बिगड़ता है, तो कई विकृतियां हैं और उन प्रजातियों को भी समाप्त किया जा सकता है। उसी से, फसलें और पालतू जानवर हजारों वर्षों में विकसित होते हैं। वर्तमान में नई किस्मों के बीज, रोग मुक्त पौधे और बेहतर जानवर विकसित किए जा रहे हैं जो आनुवंशिक अनुसंधान का परिणाम हैं। किसी भी जाति के सदस्यों के बीच आनुवंशिक भिन्नता जितनी कम होगी, विलुप्त होने का उतना ही अधिक जोखिम होगा, क्योंकि यह पर्यावरण के अनुकूल नहीं होगा।

ISSN-2230-7540

(II) जातीय विविधता

एक क्षेत्र में जानवरों और पौधों की संख्या वहां की प्रजातियों की विविधता है। यह विविधता प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र और कृषि पारिस्थितिकी तंत्र दोनों में होती है। कुछ क्षेत्र इसमें समृद्ध हैं, जैसे कि गर्म वनाच्छादित क्षेत्र, दूसरी ओर, वन क्षेत्र में केवल कुछ प्रजातियाँ हैं जो एकान्त प्रकार में विकसित होती हैं। वर्तमान गहन कृषि प्रणाली में अपेक्षाकृत कम प्रजातियां हैं जबकि पारंपरिक कृषि पारिस्थितिकी तंत्र में अधिक विविधता है। एक वंश की विभिन्न जातियों के बीच पाई जाने वाली विविधता जाति की जैव विविधता है और एक क्षेत्र में एक उपखंड की प्रजातियों के बीच भिन्नता जाति स्तर पर जैव विविधता है।

(III) पारिस्थितिक प्रणाली

पारिस्थितिक विविधता- पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार की पारिस्थितिक प्रणालियाँ हैं जो विभिन्न प्रकार की प्रजातियों के लिए निवास स्थान हैं। एक भौगोलिक क्षेत्र में विविध पारिस्थितिक प्रणालियाँ हो सकती हैं, जैसे पहाड़, घास के मैदान, जंगल, रेगिस्तान इत्यादि और एक्वीफ़र्स जैसे नदी, झील, तालाब, महासागर इत्यादि। यह विविधता विभिन्न प्रकार के जीवन को विकसित करती है जो एक प्रणाली से दूसरी प्रणाली में भिन्न होती है। इस भिन्नता को पारिस्थितिक भिन्नता कहा जाता है।

भारत में जैव विविधता संकट

भारत में वनों, आर्द्रभूमि और समुद्री क्षेत्रों में जैव विविधता की एक विस्तृत विविधता है। भारत में *350* स्तनधारी, पक्षियों में *1224*, सांपों में *408*, उभयचरों में *197*, मछलियों में *2546* और फलों में *15,000* प्रजातियां हैं। लेकिन जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई और कई अन्य कारणों के कारण, कई प्रजातियां विलुप्त हो रही हैं। एशिया के दुर्लभ जानवरों की सूची में स्तनधारी जीवों की लोमड़ी, एशियाई चीता, एशियाई शेर, भारतीय हाथी, एशियाई जंगली गधा, भारतीय गैंडे आदि शामिल हैं, *13* प्रजातियां अक्सर विलुप्त होती हैं, *20* प्रजातियां लुप्तप्राय हैं जबकि दो प्रजातियां दुर्लभ हैं। दूसरी ओर, पक्षियों की *6* प्रजातियां, सांप और सांप की *6* प्रजातियां विलुप्त हो गई हैं और इनमें से कई प्रजातियां विलुप्त होने के खतरे में हैं।

जैव विविधता के विलुप्त होने का सबसे बड़ा कारण इन जीवों के आवासों का समाप्त होना है। मनुष्यों ने अपने हितों के लिए जंगलों को खत्म कर दिया है, जिससे कई प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर हैं। इसी तरह, खेती में क्षमता से अधिक उत्पादन के लिए भूमि का दोहन किया जा रहा है, जो भूमि में फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले कारकों को नुकसान पहुंचाता है और इसकी उर्वरता खो देता है।

ISSN-2230-7540

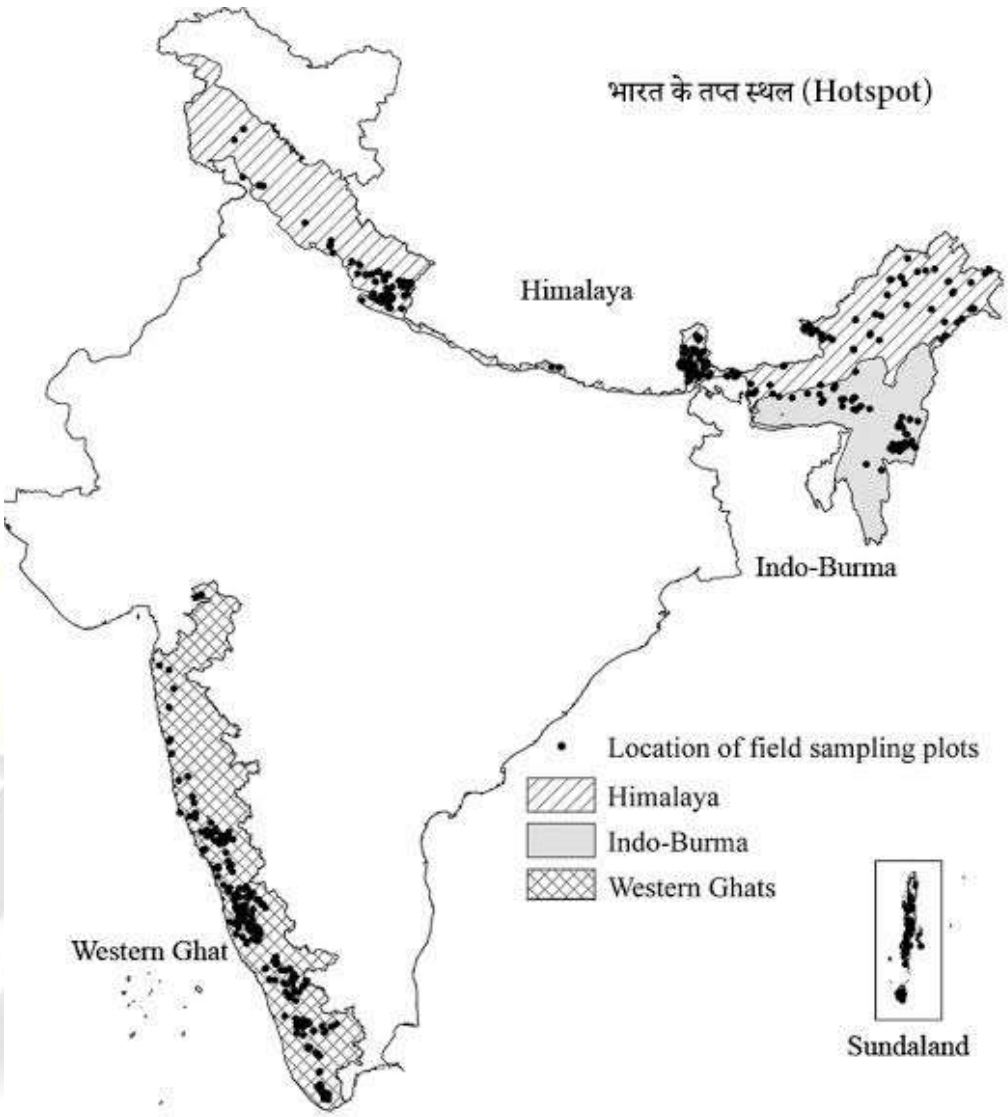

1. **लुप्तप्राय प्रजातियां**

प्राकृतिक आवासों के विनाश ने प्रजनन की स्थिति को समाप्त कर दिया है, जिससे विलुप्त होने की संभावना बढ़ गई है। उदाहरण - भारतीय पुत्र पक्षीए शेरए गेंडा।

2. **दुर्लभ जातियां**

जंगली प्रजातियाँ जो अब केवल विशिष्ट भूभाग या सीमित क्षेत्र में ही बची हैं। उदाहरण – सफेद शेर केवल भारत के बांधवगढ़ में बचा है।

3. **लुप्तप्राय प्रजातियाँ**

विनाश के कारण प्राकृतिक आवास विलुप्त हो गए हैं।

4. **विलुप्त प्रजातियाँ**

कुछ समय में पाया गया था, लेकिन पर्यावरण और प्राकृतिक संपदा के कारण गायब हो गया है। उनके अस्तित्व के साक्ष्य केवल जीवाश्म रूप में

ISSN-2230-7540

उपलब्ध हैं। उदाहरण – आर्कियोप्टेरिक्स, ट्रिलोबाइट।

5. व्यावहारिक प्रजातियाँ

प्रजातियां जो कुछ वर्षों में विलुप्त होने की स्थिति में हैं क्योंकि उनकी संख्या दिन.प्रतिदिन कम हो रही है। उदाहरण – चीता, ब्लैकबक, स्टॉर्क, बटरफ्लाई (कुछ प्रजातियाँ)।

जैव विविधता संकट के कारण

मनुष्य ने अपने विकास के लिए असंख्य प्राणियों और पौधों को नष्ट कर दिया हैए औद्योगीकरण के लिए, मुख्य कारण इस प्रकार हैं।

(1) आवासीय क्षति

जनसंख्या में भारी वृद्धि, बढ़ते शहरीकरण, औद्योगीकरण ने जंगलों को नष्ट कर दिया, जिसके विनाश ने हजारों जानवरों, पक्षियों और जानवरों के आवास को नष्ट कर दिया और इस तरह उनके अस्तित्व को खतरा पैदा हो गया। कई प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर हैं या विलुप्त हो गई हैं।

(2) वन्य जीवों का अवैध शिकार

हमारी आवश्यकताओं (जैसे भोजन और अन्य) को पूरा करने के लिए, प्राकृतिक संपादक विशाल हैं, लेकिन हमारे स्वार्थ और लालच के सामने, सींग, नाखून, चमड़े हाथी दांत जैसी चीजों से पैसे कमाने और कमाने के लालच में, ये मजबूर असहाय निर्दोष जानवर अपनी बलि दे रहे हैं रहता है। प्रतिबंधित होने के बावजूद, वे वर्षों से पीड़ित हैं और हिरण चारा बारहसिंगा सब कुछ खत्म होने के कगार पर हैं। कालाहेरन, मगरमच्छ, कछुए, विशैले सांप, सुअर, शेर, बाघ, चीता, या पक्षियों की ऐसी प्रजातियाँ खोई जा रही हैं जिनका संरक्षण आवश्यक है।

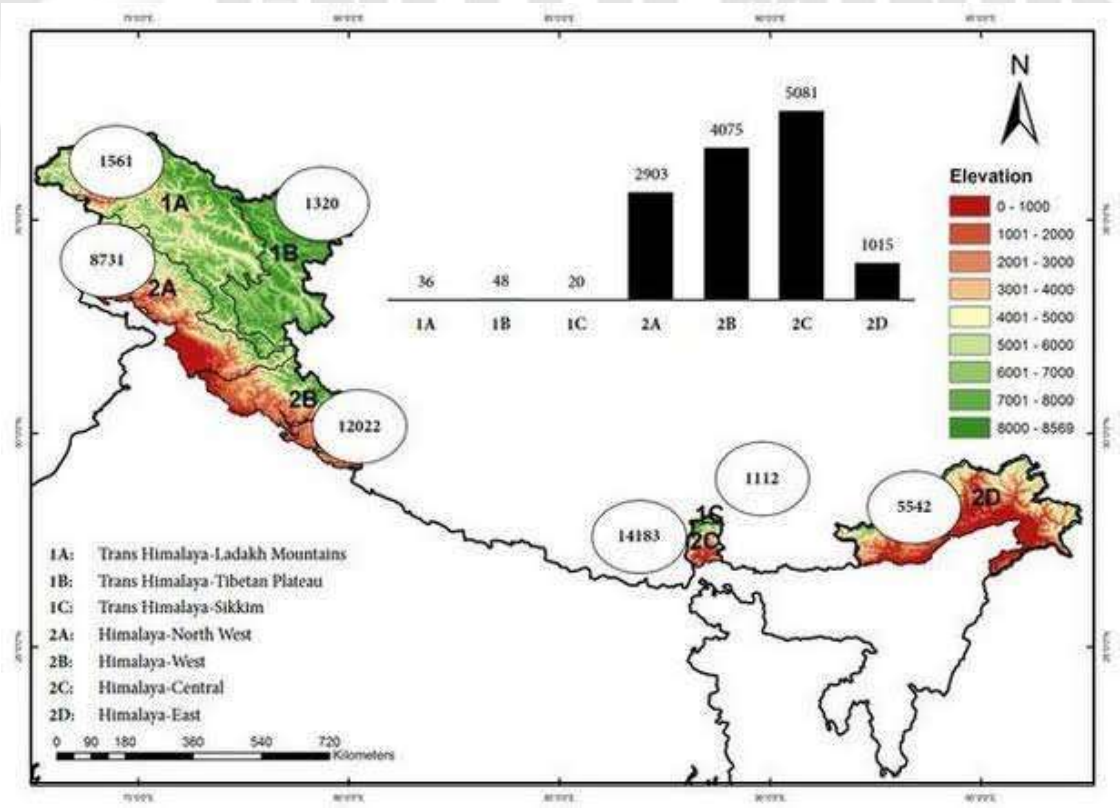

ISSN-2230-7540

(3) मानव वन्यजीव संघर्ष

वर्तमान में, अवैध वनों की कटाई कई समस्याओं, घास स्थलों और चारागाह स्थलों के रूपांतरण का कारण है। कृषि और अन्य कारणों से रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग ने पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ सूक्ष्म जीवों को भी खत्म कर दिया है। इसलिए, मानव वन्यजीव संघर्ष विवाद का समाधान केवल विकास के लिए सीमा निर्धारित करने और लाभ के लिए वन्यजीवों को खतरे में न डालने और विकास और वन्यजीवों के बीच संतुलन बनाए रखने के संकल्प के साथ संभव है।

(4) सड़कों और रेलवे के लिए वनस्पतियों और जीवों का विनाश।

(5) कृषि भूमि को आवासीय क्षेत्रों में परिवर्तित करना।

(6) उद्योगों के लिए वनों और चरागाहों का उन्मूलन।

(7) भोजन, सजावट की वस्तुओं और बाजार मूल्य की अधिकता के कारण जंगली जानवरों को मारना।

(8) विभिन्न जातियों के विलुप्त होने या खतरे को रोकना होगा।

शहरीकरण, औद्योगीकरण, जनसंख्या वृद्धि, वनों की कटाई और वन्यजीवों के आवास के विनाश के परिणामस्वरूप, दुनिया में जानवरों और पौधों की कई प्रजातियां या तो विलुप्त हैं या विलुप्त होने के कगार पर हैं। एक विलुप्त प्रजाति का पुनरू निर्माण असंभव है, इसलिए इसके प्राकृतिक आवास में इसका संरक्षण आवश्यक है। इसके लिए, अंतर्राष्ट्रीय संघ ने *1984* में रेड डेटा बुक प्रकाशित की और इसे लुप्तप्राय प्रजातियों की विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया।

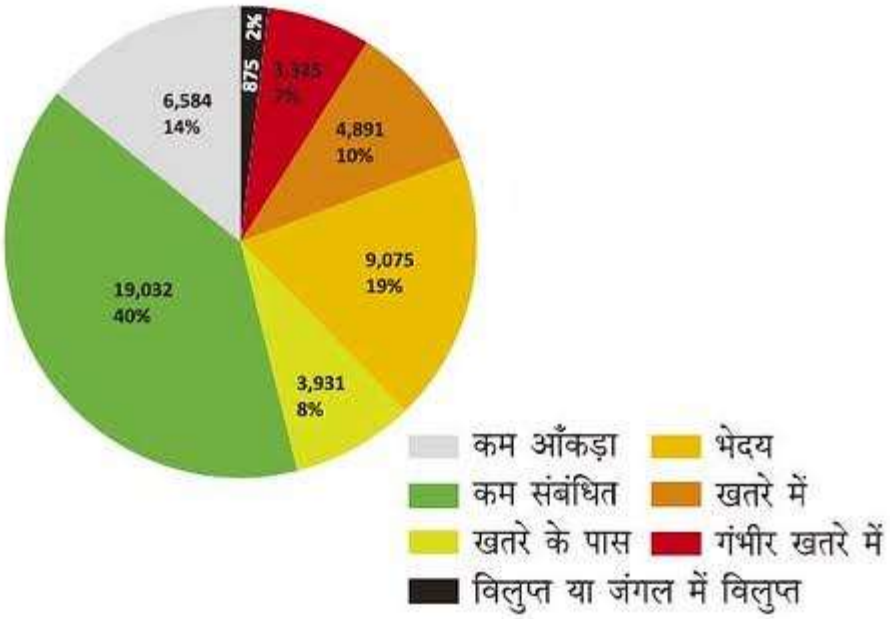

47,677 प्रजातियों के आंकड़ों के आधार पर IUCN लाल सूची पर विलुप्त होने का जोखिम के विभिन्न खतरा श्रेणियों में सभी मूल्यांकित प्रजातियों का अनुपात (स्रोत : आइ.यू.सी.एन. 2010)

ISSN-2230-7540

जैव विविधता का महत्व

इस पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने के लिए, प्रकृति ने सभी जैविक घटकों के बीच एक संबंध बनाया है, जो भोजन श्रृंखला और ऊर्जा प्रवाह को बनाए रखते हुए सभी को भोजन, हवा और पानी प्रदान करता है। यह प्रकृति के जैविक और अजैविक घटकों के बीच की बातचीत है जो पारिस्थितिकी तंत्र को सुचारू रूप से चलाती है, ऑक्सीजन, पानी, कार्बन डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन आदि जैसे प्राकृतिक चक्रों को सफलतापूर्वक बनाए रखते हुए, वर्षों से उनकी सांद्रता को संतुलित करती है। पृथ्वी पर जल चक्र पानी के रूप में अमृत की वर्षा करता है। कार्बन डाइऑक्साइड पौधों द्वारा लिया जाता है और खाद्य उत्पादन के साथ वायुमंडल में प्रचुर मात्रा में महत्वपूर्ण ऑक्सीजन होता है। नाइट्रोजन चक्र शरीर को उपयोगी अमीनो एसिड और प्रोटीन बनाता है। इस तरह, प्रकृति का हर तत्व, चाहे वह जीवित हो - जैसे पौधे, पशु, पक्षी, जानवर या मनुष्य या मनुष्य, जैसे सभी तत्व और उनका चक्र और सौर ऊर्जा का प्रवाह, सब कुछ प्रकृति का प्रबंधन है जिसके लिए जैव विविधता है बहोत महत्वपूर्ण। है। जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। जलवायु परिवर्तन जैव विविधता पर प्रभाव डालता है जबकि जैव विविधता के विलुप्त होने से पर्यावरण को नुकसान होता है। विभिन्न प्रकार के पेड़.पौधे प्रदूषण को खत्म करके एक स्वच्छ वातावरण प्रदान करते हैं, लेकिन पिछले कुछ दशकों के दौरान, मनुष्यों ने आवासीय और औद्योगिक हितों के लिए जंगलों को खत्म कर दिया है, जिससे पर्यावरण को भारी नुकसान पहुंचा है। यह भी ओजोन परत में छेद का कारण है जो हानिकारक किरणों से बचाता है।

जैव विविधता मानव को कई तरह से लाभ पहुंचाती है। दवाएं विभिन्न प्रकार की पौधों की प्रजातियों से उत्पन्न होती हैं। कई पौधे ऐसे हैं, जिनमें बड़ी बीमारियों का इलाज भी संभव है लेकिन भारत में यह दुर्भाग्यपूर्ण रहा है कि बहुत से लोग इसके फायदे जानते हैं लेकिन इस जानकारी को संरक्षित नहीं किया गया है। इन विवरणों को कागज पर अंकित करके संरक्षित करने की आवश्यकता है।

जैव विविधता के कारण पर्यावरण का संतुलन भी बना रहता है। वातावरण में मौजूद विभिन्न गैसों के बीच संतुलन जैव विविधता के कारण है, लेकिन मानव ने प्रकृति के खिलाफ काम करके जैव विविधता का काम किया है और परिणामस्वरूप जलवायु परिवर्तन भी एक अंतरराष्ट्रीय मुद्दा है।

पर्यटन व्यवसाय में जैव विविधता भी फायदेमंद है। विदेशों से लोग विभिन्न जानवरों को देखने आते हैं, जिससे कई लोगों को रोजगार मिलता है। जैव विविधता के महत्व को निम्नानुसार समझा जा सकता है।

(1) आदमी के इस्तेमाल के लिए

मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक और सुबह से शाम तक हर उपयोगी चीज पेड़, पौधों और जानवरों द्वारा प्रदान की जाती है। भोजन, फल, फूल, सब्जियां से लेकर दवाइयां, लकड़ी, चारा, मछली तक सब कुछ अलग-अलग जीवों द्वारा ही प्रदान किया जाता है।

(2) उत्पादक उपयोग

मनुष्य विभिन्न पौधों और जानवरों द्वारा उत्पादित वस्तुओं का उपयोग करता है। जड़ी बूटी, लाख, गोंद, अनाज का दूध ऊन, आदि इन जानवरों, जानवरों और पौधों से प्राप्त होते हैं, जिन्हें मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए नष्ट करते रहे हैं।

(3) सामाजिक उपयोग

सदियों से, हमारी संस्कृति में यह परंपरा रही है कि उनके प्रति श्रद्धा और करुणा की भावना विकसित करने के लिए विभिन्न पेड़ों और पौधों और जानवरों को श्रद्धांजलि दी जाए।

भौतिक मूल्य

हमारे पौराणिक ग्रंथों और पंचतंत्र और जंगल बुक जैसी पुस्तकों के माध्यम से, पेड़, पौधों और जानवरों की कहानियों के साथ जीवन के मूल्य को बदलना हमारे लिए आसान हो गया है। दृढ़ता और दान का पाठ पेड़ों से सीखा जाता है जो हमें छाया देते हैं, उनके फल और फूल उदारता से देते

ISSN-2230-7540

हैं। हिरण चपलता, शेर साहस, निडरता और शक्ति, कुत्ते को वफादारी का प्रतीक माना जाता है, जैसे पक्षी पालना। बताते हैं कि समय आने पर यह बच्चों को स्वतंत्र रूप से उड़ने की स्वतंत्रता देता है।

सौंदर्य मूल्य

अपने सुंदर, रंगीन और सुगंधित फूलों के साथ सभी प्रकार के पेड़.पौधे हमारे आंगन में हरियाली के साथ हमारे मन को खुशियों से भरने की क्षमता रखते हैं। हमारे बगीचे, घर, आंगन और सड़कें सभी को सुंदरता प्रदान करती हैं। पक्षियों की विविधता उनके सुंदर पंखों के साथ है, इसलिए कोयल की कोयल और पपीते की चिड़ियाँ मनुष्य को तनाव और खुशी से छुटकारा दिलाती हैं जिन्हें पैसे से नहीं खरीदा जा सकता है। इसलिए, जैव विविधता न केवल हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी है।

जैव विविधता जंग के सुझाव

जैव विविधता के संरक्षण के लिए हमें अपने हित में एक मानसिकता विकसित करनी होगी। वैज्ञानिकों के अनुसार, दुनिया में विभिन्न जीवों और पौधों की संख्या *1.5* से *20* करोड़ के बीच हो सकती है, जो हर साल तेजी से घट रही है। इसके संरक्षण के लिए दो तरह के उपाय हैं।

1. स्थान - राष्ट्रीय उद्यानों और अभयारण्यों, जैव-आरक्षण साइटों द्वारा।
2. बहिश्त - जीन बैंक, बीज बैंक और इनविट्रो विधि द्वारा।

लेकिन इनके अलावाए केवल हमारे दिन.प्रतिदिन के प्रयास जैव विविधता को संरक्षित कर सकते हैं।

1. वनों और वृक्षों के विनाश को रोकने के लिए।
2. जलवायु के अनुसार, अधिक से अधिक वृक्षारोपण और अधिक महत्वपूर्ण रूप से उनका संरक्षण।
3. उपलब्ध जल संसाधनों का किफायती उपयोग।
4. रेगिस्तानी क्षेत्रों को उपजाऊ और हरा.भरा बनाने का प्रयास।
5. खानों के अनियंत्रित खनन पर प्रतिबंध।
6. चारागाह क्षेत्रों में अनियंत्रित मवेशियों के भोजन पर प्रतिबंध।
7. कृषि योग्य भूमि का उपयोग पूरी तरह से घूर्णी फसल लगाकर किया जाना चाहिए।
8. खनिजों का किफायती उपयोग।
9. नदियों और जलाशयों में जहरीले रसायनों के मिश्रण को प्रतिबंधित किया जाना चाहिए क्योंकि पशु और पशु अपना जीवन खो देते हैं। मनुष्यों में कई गंभीर बीमारियाँ भी जन्म लेती हैं।
10. पानी के महत्व और इसके किफायती उपयोग को समझना।
11. सभी प्राकृतिक संसाधन, यह चांदी, सोना या पेट्रोल, पौधे या पानी हो, पानी के महत्व को समझें और उनका संरक्षण करने की मानसिकता विकसित करें।

ISSN-2230-7540

जैव विविधता संरक्षण के प्रयास

विभिन्न प्रजातियों के विलुप्त होने के कारण उन्हें बचाने का अभियान भी तेज हो गया है। वर्तमान में, जैव विविधता बैंक बनाए जा रहे हैं जहां विभिन्न प्रजातियों के पौधे, बैक्टीरिया, कवकए बीज आदि का रखरखाव किया जा रहा है और इसका सबसे अच्छा उदाहरण ऑस्ट्रेलिया का मूल निवासी वनस्पति प्रबंधन ढांचा है। भारत में भी ऐसे बैंकों के निर्माण के प्रयास किए जा रहे हैं। स्मिथसनिया ट्रॉपिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट, एसोसिएशन फॉर ट्रॉपिकल बायोलॉजी एंड कंजर्वेशन, ईटीसी ग्रुप, सोसाइटी फॉर कंजर्वेशन बायोलॉजी, अमेजन कंजर्वेशन टीम, कंजर्वेशन बायोलॉजी इंस्टीट्यूट आदि भारत में जैव विविधता को बचाने के लिए काम कर रहे हैं। भारत में जैव विविधता संरक्षण के लिए भी कई परियोजनाएँ काम कर रही हैं।

निष्कर्ष

यह प्राकृतिक धन अपार है, इसे प्रकृति ने हमारे अपने लाभ के लिए बनाया है, लेकिन हमें इसके मूल्य को समझने के लिए बुद्धि का विकास करना होगा, तभी हम इस सुंदर अद्भुत प्रकृति का आनंद ले पाएंगे और आने वाली पीढ़ियों के लिए खुशी लाएंगे। उत्तराधिकार देने में सक्षम होना जो हमारा सब कर्तव्य है। प्रत्येक जीवित प्राणी और प्रत्येक प्रजाति को इस धरती पर अपनी प्रजाति को जीने, बसने, विकसित करने का अधिकार है, जब हम इसे समझेंगे, तो जैव विविधता बनी रहेगी। यही हमारा सच्चा विकास और प्रगति है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जैव भूगोल, प्रो. सविन्द्र सिंह, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश।
2. पर्यावरण भूगोल, प्रो. सविन्द्र सिंह, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश।
3. पर्यावरण भूगोल, डॉ. रतन जोशी, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, उत्तर प्रदेश।
4. पादप परिस्थितिकी, पादप भूगोल एवं जैव सांख्यिकी, प्रो एन एल व्यास इत्यादि, हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर, राजस्थान।
5. जैव भूगोल, डॉ संतोष कुमार डांगी, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, उत्तर प्रदेश।
6. भूगोल में समकालिक मुद्दे, डॉ. चतुर्भुज ममोरिया एवं डॉ संतोष कुमार डांगी, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, उत्तर प्रदेश।
7. भारत एवं विश्व का भूगोल, माजिद हुसैन, एम. सी गर्व हिल पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
8. जैव विविधता संरक्षण, भूगोल और आप मासिक पत्रिका, *2010*
9. भारत का भूगोल, डॉ चतुर्भुज ममोरिया, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, उत्तर प्रदेश।
10. भौतिक भूगोल, प्रो. सविन्द्र सिंह, वसुंधरा प्रकाशन, गोरखपुर, उत्तरप्रदेश।

Corresponding Author

Anita Mathur*

Lecturer, Department of Geography, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan